IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति और शिक्षक शिक्षा

डॉ सोमेश नारायण सिंह(विभागाध्यक्ष एम एड)

हंडिया पी.जी. कॉलेज हंडिया प्रयागराज

मनुष्य इस धारा की सर्वोत्तम कृति के साथ ही सर्वोतक्रिष्ट बौद्धिक प्राणी है। वह इस संसार में जीवन का अस्तित्व एवं निरंतरता बनाये रखने के लिए जन्मजात शक्तियों को लेकर जन्म लेता है। उन जन्मजात शक्तियों जिनके कारण व्यक्ति के संपूर्ण व्यक्तित्व का विकास होता है उनका विकास शिक्षा द्वारा ही संभव है। वस्तुतः शिक्षा अपने परिष्कृत एवं शुद्ध रूप में मानव को विवेकशील बनाती है। प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री जान लाक ने ठीक ही लिखा है–" जिस प्रकार पौधे का विकास खेती की अच्छी जुताई से होता है उसी प्रकार मनुष्य का विकास शिक्षा द्वारा होता है" । जान डीवी ने लिखा है "जिस प्रकार शारीरिक विकास के लिए भोजन का महत्व है उसी प्रकार सामाजिक विकास के लिए शिक्षा का"इस प्रकार व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, नैतिक ,चारित्रिक ,संवेगात्मक तथा आध्यात्मिक विकास के लिए शिक्षा आवश्यक है। प्राचीन काल में शिक्षा को ईश्वरीय गुणों के प्राप्ति , आत्मज्ञान या मोक्ष प्राप्ति के साधन के रूप में स्वीकार किया गया है इसलिए भारतीय दर्शन में " सा विद्या विमुक्तये" - शंकराचार्य ," शिक्षा व है जिसका परिणाम मुक्ति है"- उपनिषद,शिक्षाके विषय में कहा गया है । कालांतर में शिक्षा का अर्थ बालक के अंतर्निहित शक्तियों को बाहर निकालने और उनको विकसित करने की प्रक्रिया से है जो अनवरत चलने वाली प्रक्रिया के रूप में है।

शिक्षा प्राप्ति के लिए शिक्षक शिक्षार्थी और पाठ्यक्रम के बीच अंतः क्रिया के परिणाम स्वरूप बालक के व्यवहार में परिवर्तन(शारीरिक, मानसिक, नैतिक, आध्यात्मिक आदि) विकास होता है जिसमें शिक्षक एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में है। शिक्षक के महत्व को ध्यान में रखकर शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार की गई एवं प्राचीन समय से लेकर अब तक समय-समय पर इसके स्वरूप में बदलाव आते गए। प्राचीन काल में गुरु आश्रम में औपचारिक रूप से शिक्षक शिक्षा का पाठ्यक्रम नहीं चलाया जाता था लेकिन शिक्षक वहीं से निकलते थे, समय के साथ बौद्ध काल और मुस्लिम काल में मानिटरिंग पद्धति के द्वारा आदर्श शिक्षक प्राप्त होते रहे हैं और औपचारिक रूप से शिक्षक शिक्षा अंग्रेजी शासनकाल से प्रारंभ होकर अपने आधुनिक स्वरूप की तरफ निरंतर अग्रसर है।

वर्तमान समय में आधुनिक शिक्षा में नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत शिक्षक शिक्षा का उद्देश्य शिक्षक शिक्षा प्रणाली को बहुविषयक महाविद्यालय और विश्वविद्यालयों से जोड़कर चार वर्षीय एकीकृत स्नातक डिग्री को स्कूल शिक्षकों के लिए न्यूनतम योग्यता स्थापित करके यह सुनिश्चित करना कि शिक्षकों को विषय, शिक्षण शास्त्र और प्रैक्टिस में गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण प्राप्त हो इसके लिए एक प्रभाव कारी रणनीति के तहत शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम की रूपरेखा डिजाइन की गई है।

शिक्षक शिक्षा में बहुविषयक प्रक्रिया के साथ-साथ उच्च गुणवत्ता की विषयवस्तु और शिक्षण–शास्त्र के समिश्रण की जरूरत है। इसकी पूर्ण प्राप्ति तभी होगी अगर सम्मिलित बहुविषयक संस्थानों द्वारा शिक्षक की तैयारी होगी। हमारे शिक्षकों के लिए इस तरह के समग्र और परिपूर्ण शिक्षा मुहैया करवाने का महत्व इसलिए भी है क्योंकि उन्हें आगे चलकर इसी प्रकार की शिक्षा बच्चों को देनी है, इसलिए इन उच्च शिक्षा संस्थानों को खुद इस तरह की समग्र और बहु विशेष शिक्षा देने वाली जगह बनाना पड़ेगा।

उच्च शिक्षण क्षेत्र में शिक्षा के सारे स्तरों और पाठ्यक्रम के सारे क्षेत्रों में शिक्षक की तैयारी के लिए एकीकृत कार्यक्रमों को शुरू करना चाहिए, जबकि सिंगल स्ट्रीम कार्यक्रम को धीरे–धीरे बंद करना चाहिए । सारे बड़े बहुविषयक विश्वविद्यालयों के साथ में सारे सार्वजनिक क्षेत्र के विश्वविद्यालयों और सारे माडल बहुविषयक महाविध्यालयो को उत्कृष्ट शिक्षा विभाग स्थापित और विकसित करना चाहिए शिक्षा में महत्वपूर्ण शोध के साथ–साथ इसे एक बी .एड . कार्यक्रम भी चलाना चाहिए जो अन्य विभागों जैसे मनोविज्ञान, तर्कशास्त्र, समाजशास्त्र, तंत्रिका विभाग, भारतीय भाषाएं, कला, इतिहास और साहित्य साथ ही साथ अनेक विशिष्ट विषय जैसे गणित और विज्ञान के सहयोग से होना चाहिए। इसके साथ–साथ वर्तमान के सारे मौजूदा वास्तविक शिक्षक शिक्षा संस्थानों को 2030 तक बहुविषयक उच्च शिक्षा संस्थान बनाने का लक्ष्य होगा । यह शिक्षक शिक्षा में एक मुख्य परिवर्तन है और आधुनिक शिक्षा की भविष्य की जरूरतों के अनुसार व्यवस्था में उच्च गुणवत्ता लाएगा।

वर्तमान में खराब शिक्षक शिक्षा संस्थानों जो मौलिक शैक्षिक मापदंडों पर खरे नहीं उतरते, उन को बंद कर देना चाहिए । इस प्रयास को एम.एच.आर.डी. मिशन के रूप में एक मजबूत राजनीतिक इच्छाशक्ति, सकारात्मक प्रशासनिक सोच और प्रभावी रणनीति के साथ लागू करेगी। सभी शिक्षक शिक्षा संस्थान अपने कार्यक्रमों के अनुमोदन के मूल शर्तों के अनुपालना के प्रति जवाबदेह होंगे । इनको सुधार करने के लिए एक वर्ष का समय दिया जाएगा, यदि इसके बाद कोई ऐसा संस्थान पाया गया जो उपरोक्त सुधार नहीं कर पाया उसे बंद कर दिया जाएगा । हमें कुछ मजबूत कानूनी नियम बनाने होंगे जिनकी मदद से इन सुधारों को प्रभावी रूप से सुनिश्चित किया जा सके । वर्ष 2023 तक भारत में शिक्षक की तैयारी के लिए केवल अच्छे शैक्षिक कार्यक्रम ही चलेंगे जो कि शिक्षकों को पेशेवर रूप से सक्षम बनाएंगे और बाकी सारे बंद हो जाएंगे ।

शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों को भविष्य महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में लाना– आजकल छात्रों को उपलब्ध शिक्षा की गुणवत्ता संबंधित ज्यादातर परेशानियों की वजह दशकों से चली आ रही शिक्षक शिक्षा की उपेक्षा है । ज्यादातर शिक्षक तैयारी हेतु कार्यक्रमों में दृष्टिकोण और क्षमता संवर्धन पर कम काम होता है । पाठ्यक्रम और कक्षा कक्ष प्रक्रियाएं पुराने ढंग की हैं और विद्यालयों की वास्तविकता और उनमें पढ़ने वाले बच्चों से दूर है। शिक्षक शिक्षा संस्थानों के शिक्षक शोधकर्ताओं और शिक्षकों के बड़े समुदाय से ज्यादातर कटे रहते हैं ।

शिक्षक शिक्षा के पाठ्यक्रम और शिक्षण पद्धति को शैक्षिक दृष्टिकोण, विषय ,थ्योरी और प्रैक्टिकल में जुड़ाव स्थापित करने वाला होना चाहिए । शिक्षकों का शिक्षा के इतिहास, उद्देश्य और सामाजिक व नैतिक संबंध से गहन जुड़ाव होना होगा । उन्हें विषय की वैचारिक समझ और इसे कैसे सिखाया जाए, यह सीखने की समझ के अलावा बच्चे के विकास और सीखने के सामाजिक संदर्भ जैसे विषयों की महत्व को पहचानने की जरूरत होगी । एक शिक्षक की तैयारी के लिए पर्याप्त समय और स्थान की जरूरत होती है जिसमें शैक्षिक दृष्टिकोण, विषय और शिक्षण शास्त्र की समझ के साथ-साथ एक शिक्षक की पहचान भी विकसित हो, इसके लिए सैद्धांतिक ज्ञान को प्रैक्टिस से जोड़ने हेतु लगातार अभ्यास की आवश्यकता होती है। दो बातें अनिवार्य है –पहली, अभ्यास विभिन्न प्रकार का होना चाहिए और दूसरा, सैद्धांतिक ज्ञान से उसके जुड़ाव की चर्चा आवश्यक है । यह सबसे अच्छे तरीके से एक बहुविषयक शैक्षिक वातावरण में हो सकता है।

एक अच्छे शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम में शिक्षा से जुड़े हर क्षेत्र में विशेषज्ञता की जरूरत है । प्रारंभिक शिक्षा में विशेषज्ञता विषयों के शिक्षण शास्त्र, मूल्यांकन और पाठ्यक्रम की समझ और शिक्षा सामग्री बनाना, स्कूल नेतृत्व और प्रबंध के अलावा मनोविज्ञान, तर्कशास्त्र, समाजशास्त्र, भारत के बारे में ज्ञान और शिक्षा के इतिहास में विशेषज्ञता की जरूरत होती है । संस्थानों को शिक्षक की अच्छी तैयारी के लिए शिक्षक शिक्षा के अलावा सभी विषयों के लिए शिक्षक और अलग-अलग कार्यक्रमों को उपलब्ध कराना चाहिए। ऐसे संस्थान जहां पर केवल शिक्षक शिक्षा ही दी जाती है वह ऐसे धैर्य वैविध्यपूर्ण हुनरमंद लोगों को तैयार नहीं कर सकते जो कि एक अच्छे शिक्षक शिक्षा के लिए जरूरी है । कुल मिलाकर बात यह है कि शिक्षक शिक्षा में शिक्षक सिर्फ पाठ्य वस्तुओं का रटंत शिक्षण नहीं कर सकते बल्कि उनके पास विषय के गहन समझ के साथ शिक्षण के मजबूत और सकारात्मक अनुभव होने चाहिए ।

उच्च शिक्षा के बहुविषयक संस्थान उच्च गुणवत्ता के शिक्षण विभाग और शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों को बनाने के लिए कार्य करेंगे । इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए जरूरत के अनुसार सरकार का सहयोग होगा । उच्च शिक्षण संस्थान यह सुनिश्चित करेंगे कि शिक्षा और इससे संबंधित विभिन्न विषयों के विशेषज्ञ उपलब्ध हो, प्रत्येक उच्च शिक्षण संस्थान के पास सरकारी, गैर सरकारी और स्कूल कंपलेक्स का एक नेटवर्क होगा जिसके साथ वह करीब से काम करेंगे और जहां पर भावी शिक्षक शिक्षा अभ्यास करेंगे । इस तरह के उच्च शिक्षण संस्थान समग्र शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम विकसित करेंगे जो कि शिक्षा और विषय विशेष संबंधित विषय की अकादमिक समझ पर आधारित होंगे । शिक्षा में अद्यतन शिक्षण शास्त्र के अलावा पाठ्यचर्या, समाजशास्त्र, इतिहास, साहित्य, विज्ञान, दर्शनशास्त्र, मनोविज्ञान, प्रारंभिक शिक्षा, बुनियादी साक्षरता और

संख्या ज्ञान भारत के बारे में ज्ञान और भारतीय मूल्यो , व्यवहार, कला, संस्कृत आदि के बुनियादी समझ पर आधारित होगा।

2030 तक सारे शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम कराने वाले उच्च शिक्षण संस्थान बहुविषयक होंगे और चार वर्षीय एकीकृत बी.एड. कार्यक्रम उपलब्ध कराएंगे । चार वर्षीय एकीकृत बी. एड. कार्यक्रम ड्यूल मेजर लिबरल बैचलर्स डिग्री शिक्षा और कुछ विशेष विषयों जैसे भाषा, इतिहास, संगीत, कंप्यूटर, विज्ञान, रसायन विज्ञान और अर्थशास्त्र आदि में होगा । सारे उच्च शिक्षण संस्था अभी दो वर्षीय कार्यक्रम और डिप्लोमा कार्यक्रम उपलब्ध करा रहे हैं उनको चार वर्षीय एकीकृत बी.एड.बहुविषयक संस्थानों में परिवर्तित कर दिया जाएगा।

नए शिक्षकों के निर्माण हेतु पर्याप्त व्यवस्था करना एक तरफ शिक्षक की तैयारी के लिए चार वर्षीय एकीकृत पाठ्यक्रम में मूलभूत परिवर्तन और दूसरी ओर खराब संस्थानों को बंद करने के लिए नए शिक्षकों के निर्माण हेतु पर्याप्त व्यवस्था करने की जरूरत पड़ेगी । इस क्षेत्र में पर्याप्त सरकारी निवेश की जरूरत होगी और प्राथमिकता के आधार पर दस वर्ष तक सालाना एक आकलन किया जाएगा । प्रत्येक सरकारी विश्वविद्यालय 2024 तक और मॉडल बहुविषयक महाविद्यालय 2029 तक शिक्षकों के निर्माण हेतु चार वर्षीय कार्यक्रम उपलब्ध कराएंगे । आर. एस. ए. की बनाई गई विशेष योजनाओं के द्वारा फिलैंथरोपिक प्रयासों को बढ़ावा दिया जाएगा ।

विश्वविद्यालयों में शिक्षा के विभाग शिक्षण के अलावा विश्वविद्यालयों में शिक्षा के विभागों में नवाचार और शोध को मजबूत और विकसित करने की जरूरत होगी| यह महत्वाकांक्षी लक्ष्य हैं और विश्वविद्यालयों में शिक्षा के विभागों को इसके लिए तैयार करना होगा जिससे वे हर विषय में शिक्षा के कार्यक्रमों को मजबूती प्रदान करने के लिए एक मुख्य भूमिका निभाएंगे | यह कार्य वह अन्य संबंधित विभागों के साथ सार्थक संबंध बनाकर करेंगे, वे स्कूलों के सेवा-पूर्व प्रशिक्षण और शिक्षकों के सेवारत प्रशिक्षण के साथ-साथ उच्च शिक्षा में शिक्षकों की आवश्यकता पूरी करेंगे | वो शिक्षक शिक्षा के शिक्षकों को भी तैयार करेंगे जो एक महती जिम्मेदारी है | इन विभागों में शिक्षकों का रूप बहुविषयक होगा और शोध व प्रकाशन में इनकी अच्छी उपलब्धियां होंगी | इन विभागों को स्नातकोत्तर और शोध डिग्रियों में अलग-अलग विशेषज्ञता उपलब्ध कराने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा ताकि वे अलग-अलग निपुणता को दे सकें | इन केंद्रों को अभ्यासरत शिक्षकों के लिए ऐसे कार्यक्रम उपलब्ध कराने चाहिए जो समन्वित और अंशकालिकहो , जिससे अभ्यासरत शिक्षक उच्च शिक्षण शिक्षा को प्राप्त कर सकें और उनके लिए व्यवसायिक लचीलापन हो।उनको शिक्षक के सेवारत प्रशिक्षण और नए शिक्षकों के लिए मार्गदर्शक कोर्स और गतिविधियों का निर्माण करना चाहिए|

प्राथमिकता के अनुसार शिक्षक शिक्षा में सरकारी निधिकरण को बढ़ावा दिया जाएगा | रुचि रखने वाले सारे विश्वविद्यालयों में डिपार्टमेंट सेंटर आफ एक्सीलेंस इन एजुकेशन स्थापित किया जाएगा और इन केंद्रों की स्थापना भविष्य में स्कूल और उच्च शिक्षण संस्थानों में शिक्षा और शिक्षक शिक्षा में शिक्षकों की अनुमानित संख्या के आधार पर आधारित होगी | इन शिक्षा के विभागों का उद्देश्य होगा कि वे शिक्षकों के लिए दोनों सेवा पूर्व और सेवारत में शिक्षक की उच्च तैयारी हेतु कार्यक्रम उपलब्ध कराएंगे।

शिक्षक शिक्षा के लिए क्षमता संवर्धन योजना आर. एस. ए. द्वारा तुरंत एक सुनियोजित और व्यापक योजना का निर्माण किया जाएगा | फिर हर पांच वर्ष में केंद्र और राज्य सरकार शिक्षक और शिक्षक शिक्षा संकाय की मांग और आपूर्ति की समीक्षा करेंगे | शिक्षकों की गिनती के अनुमान में यह भी देखा जाएगा कि सारे स्कूलों में कितने विषय के शिक्षक और स्पेशल शिक्षकों की जरूरत है इसके अनुसार उन विश्वविद्यालयों और स्वायत्त महाविद्यालयों की गिनती निर्धारित होगी जो चार वर्षीय बी.एड. कार्यक्रम उपलब्ध कराएंगे|

शिक्षक शिक्षा संकाय डिपार्टमेंट ऑफ एजुकेशन विभिन्न शिक्षकों को सम्मिलित करेगा जो शिक्षक की तैयारी में अलग-अलग विशेषज्ञता रखते हो | जिनको शिक्षा का ज्ञान और अनुभव हो, समाज, शिक्षा के उद्देश्य, ज्ञान की प्रकृति और समावेशन, शिक्षण शास्त्र, पाठ्यक्रम और मूल्यांकन के ज्ञान का बहुविषयक दृष्टीकोण हो | शिक्षकों का शोध , प्रकाशन, फिल्ड एक्सन , स्कूल और शिक्षण के साथ जुड़ाव में एक अच्छा ट्रैक रिकॉर्ड होना चाहिए| विभागों को ऐसे शिक्षक तैयार करने चाहिए जो कि अलग-अलग विशेषज्ञता औरपारंगतता में संतुलन बना सके जिनसे ऐसे बहुमुखी प्रतिभाशाली शिक्षक विकसित हो सके जो संवैधानिक मूल्यों से जुड़े हो जिनमें सैद्धांतिक ज्ञान और दृष्टिकोण की मजबूत पकड़ हो और नए दृष्टिकोण को अपनी कार्यप्रणाली में शामिल करने का तजुर्बा होगा।

डिपार्टमेंट ऑफ एजुकेशन को समन्वित और अंशकालिक कार्यक्रम उपलब्ध कराने चाहिए जिससे अभ्यासरत शिक्षक उच्च शिक्षक शिक्षा को प्राप्त कर सकें और उनके लिए पेशेवर लचीलापन भी हो | उन्हें सेवारत शिक्षकों के लिए और नए शिक्षकों के लिए मार्गदर्शक कार्यक्रम कोर्स और गतिविधियों का निर्माण करना चाहिए | सभी कोर्स को पूर्णकालिक के अलावा अंशकालिक, सायंकाल, समन्वित और ऑनलाइन भी अवश्य उपलब्ध होना चाहिए | शिक्षा विभाग में सेवारत शिक्षकों को एक अहम लक्षित विद्यार्थियों के समूह के रूप में देखना चाहिए और ऐसे कार्यक्रमों का निर्माण होना चाहिए जो इन लोगों के ऑनलाइन तथा नियमित कोर्स के रूप में उपलब्ध कराए जाएंगे।

शोध आधारित शिक्षक की तैयारी डिपार्टमेंट ऑफ एजुकेशन ऐसे शोध समूह को प्रोत्साहित करेंगे जो फिल्ड में काफी शोध करें | सारे शिक्षक समूह शोध में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित किए जाएंगे | शिक्षण शोध, बच्चे कैसे सीखते हैं, शिक्षक की तैयारी और गुणवत्तापूर्ण सीखने में स्कूल कैसे काम करते हैं, जैसे प्रक्रिया में पिछले तीस सालों में महत्वपूर्ण विकास हुए हैं | यह सब अंतरराष्ट्रीय शोध कई ऐसे नवाचारी जमीनी प्रयोगों का ही नतीजा है इनमें से ज्यादातर भारत से ही जुड़े हुए हैं | यदि हम एक बेहतर शिक्षक बनाना चाहते हैं तो प्रशिक्षु शिक्षकों को एक गहन समझ और समृद्ध प्रैक्टिस सिखाने के लिए उनको दी जाने वाली शिक्षा के अंदर इन सभी बेहतरीन विमर्श और जमीनी प्रयोग को विश्वस्तर पर हुए बेहतरीन कामों को और साथ ही साथ भारतीय नवाचार और कोशिशों को शामिल करना पड़ेगा | यह अच्छा होगा कि शिक्षक की तैयारी शोध और फील्ड एक्शन के क्षेत्रों में हो इन केंद्रों में ज्ञान और प्रैक्टिस के लिए शोध और नवाचार का एक जीवंत वातावरण उपलब्ध हो | शोध आधारित शिक्षा और विशेषज्ञता यह सुनिश्चित करेगी कि ज्ञान और प्रैक्टिस समकालीन और स्कूलों तथा उच्च शिक्षा की आवश्यकता के अनुसार होगी ।

स्पेशल विषयों के लिए अंतर विभागीय सहयोग विश्वविद्यालयों में कला, ललित कला, निष्पादन कलाएं और लोक कला के विभागों को डिपार्टमेंट ऑफ एजुकेशन के साथ मिलाकर शिक्षक शिक्षा के कार्यक्रम बनाने और उपलब्ध कराने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा | जब तक शिक्षक शिक्षा का यह क्षेत्र शिक्षा में विशेषज्ञता के रूप में नहीं उभरता तब तक कला और ललित कला के विभागों को शिक्षक की तैयारी से संबंधित कार्यक्रमों के बनाने में योगदान देने की जरूरत होगी | मास्टर इन एजुकेशन कार्यक्रम के साथ-साथ स्नातकोत्तर कार्यक्रम में शिक्षा में विशेषज्ञता और कला में स्थापित किया जाएगा | विशेषज्ञ शिक्षकों के अनुसार तैयारी के लिए भी इसी प्रकार की जरूरत है विश्वविद्यालय प्रबंधन को इस प्रकार के अंतर विभागीय सहयोग को बढ़ावा देना चाहिए।

शोध और पीएचडी कार्यक्रमों में शोध और शिक्षा में उच्च अकादमिक डिग्री के द्वारा विश्वविद्यालय को शिक्षा, शिक्षण शास्त्र और शिक्षा के अलग-अलग पहलुओं जैसे समानता पिछड़ेपन के मुद्दे और अर्थशास्त्र ,शिक्षा का वित्तीय प्रावधान, नीति प्रबंधन और नेतृत्व संबंधित ज्ञान को विकसित किए जाने की जरूरत होगी | एम.ए. एजुकेशन अपने अलग-अलग विशेषज्ञताओं के साथ पेशेवर और उन शोधकर्ताओं के लिए जो शिक्षा के अलग-अलग क्षेत्र जिनमें विभिन्न पाठ्यक्रम संबंधी क्षेत्र जैसे शिक्षा, शास्त्री अध्ययन, मूल्यांकन और आकलन, स्कूल नेतृत्व और प्रबंधन, नीति अध्ययन, शिक्षा के बुनियादी क्षेत्र जैसे मनोविज्ञान, समाज का इतिहास दर्शन, शिक्षा का वित्तीय प्रबंधन, तुलनात्मक और अंतरराष्ट्रीय शिक्षा, आईसीटी, और उनके विकास को समर्थ करेगा।

संन्दर्भ-

1. डॉ हरेन्द्र सिंह:अनुशंधन एवंअध्यापक शिक्षा के मुद्दे ;आर. लाल प्रकाशन मेरठ
2. डॉ एस.पी .:भारतीय इतिहास विकास एव समस्याएं;शारदा प्रकाशन इलाहाबाद
3. डॉ शरातेंदु :अध्यापक शिक्षा ;शारदा प्रकाशन इलाहाबाद
4. रास्ट्रीय शिक्षा निति ड्राफ्ट 2019
5. Ncte Regulation 2014
6. Ncte Regulation 2019